अध्याय 8

निष्कर्ष

अध्ययनित क्षेत्र के अध्ययन के बाद निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यह निवास करने वाली पहाड़ी कोरवा जनजाति के जीवन जीने के शैली में ज्यादा परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। इनके जीवन स्तर में कुछ ऐसे भी पक्ष है जिसमें पारंपरिकता देखने को मिलती है। इनका जीवन बहुत ही सामान्य है। ये अपने आप को प्राकृति से जन्मे मानते है,क्योकि इनका मानना है कि 'कोरई' के वृक्ष ने ही इनकी जान बचाई है और इसी वृक्ष के कारण आज इनका अस्तित्व है।

8.1 पहाड़ी कोरवा जनजाति में धर्म का प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण-

जिस प्रकार **मैलीनोवस्की**[1] **ने धर्म के** प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण में यह बताने का प्रयास किया की सभी मानवीय समाजो में धर्म संरचना और कार्यों के द्वारा एकता स्थापित होता है । धर्म का कार्य मानव मस्तिष्क को तनाव और दबाव से मुक्त करना है । वे कहते हैं कि धर्म एक उपकरण है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक और भौतिक स्थिरता प्राप्त करता है । ठीक उसी प्रकार पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी धर्म का उपयोग एक उपकारण के रूप में किया जाता है, ये अपनी अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति अपने देवी-देवताओं के माध्यम से करते है चाहे भोजन के लिए हो या किसी भी प्रकार कि कष्ट को दूर करने के लिए हर आवश्यकताओं कि पूर्ति हेतु धर्म का सहारा लिया जाता है। जब इनकी समस्याएँ दूर होती है तब इन्हे मानसिक रूप से खुशी मिलती है।

[1] *Malinowski, B. (1948). Magic Science and Religion. California university: Greenwood Press.*

8.2 परिकल्पना का परीक्षण-:

मेरी पहली परिकल्पना थी

1. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है।

इनके जीवन में धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों का बहुत ही ज्यादा महत्व देखने को मिलता है। प्रत्येक दिन सुबह से लेकर शाम तक इनके जीवन में कुछ ना कुछ ऐसे घटना घटित होती है जिसका संबंध धार्मिक विश्वासों और क्रियाकलापों से जुड़ा हुआ होता है। **श्रीवास्तव[2] (1958)** के अनुसार "थारु जनजाति में किसी भी प्रकार की कष्ट आने पर अपने देवी-देवता से मदद लिया जाता है और जैसी ही उसका कष्ट दूर होता है अपने देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप करता है" पहाड़ी कोरवा की धार्मिक जीवन की बात करे तो यह निष्कर्ष सामने आता है कि जब इन्हे किसी भी चीज कि आवश्यकता होती है या किसी भी प्रकार का कष्ट होता है तभी ये अपने देवी देवता के पास जाकर मदद मांगतें है क्योंकि इनका विश्वास है कि इनके देवी-देवता इनकी हर समस्या का समाधान करते है और ये उससे संबन्धित अनेक क्रियाकलाप करते है। जैसे गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक के संस्कार में आवश्यकता के अनुरूप उनसे संबन्धित क्रियाकलाप करते है, जैसा कि यह माना जाता है की किसी दंपति का कई वर्षो तक जब बच्चा नहीं होता तब ये अपने इष्ट देवता के पास जाकर मन्नत मांगते है और जैसे ही इनकी मन्नत पूरी हो जाती है पूजा-पाठ, बलि देकर धार्मिक क्रियाकलाप किया जाता है।

[2] *Srivastav, S.K. (1958). The Tharus:A study in Culture Dynamics. Agra: university press.*

इसी प्रकार इनके आर्थिक जीवन में भी धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। **शर्मा**[3] **(1993)** ने "छत्तीसगढ़ के कमार जनजाति के धार्मिक विश्वासों, क्रियाकलापों, का वर्णन कर यह बताने का प्रयास किया कि कमार जनजाति के लोग किसी को कार्य को शुरू करने के पूर्व अपने देवी-देवता को नमन करते है। कमार जनजाति के लोग अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि भी देता है" पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी जब भी किसी कार्य को शुरू किया जाता है तो उसके पूर्व अपने देवी-देवता के नाम से नमन किया जाता है जैसा कि कृषि कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व, औषधि संकलन के पूर्व, बैगा-गुनिया करने से पूर्व देवी-देवता को यादकर नमन किया जाता है। साथ ही ये भी अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि देते हैं। कृषि का कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व तथा अंत में अपने देवी-देवता, उससे संबन्धित पूजा-पाठ की जाती है, इनमें यह विश्वास है की जब तक पूजा-पाठ करके कृषि का कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता तथा फसल के कट जाने के बाद प्रथम भोग अपने देवी-देवता को नहीं कराया जाता तो इनके देवी-देवता नाराज होकर इन्हे कष्ट पंहुचाते है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में यात्रा,खाद्य संकलन,गर्भवती महिलाओं, विवाह, मृत्यु से भी संबन्धित धार्मिक विश्वास औए क्रियाकलाप देखने को मिलता है।

"बैगा" बनने के विधि में सर्वप्रथम चरण मुख्य देवी-देवताओं को नमन किया जाता है, झाड़-फुक करने के पूर्व ,औषधि लाने के पूर्व अपने देवी-देवता का सुमरन करते हैं इनमें यह विश्वास पाया जाता है कि जब तक देवताओं का सुमरन नहीं किया जाता उनके बैगा गुनिया करने से व्यक्ति ठीक नहीं होता इनके अंदर पाये जाने वाली सभी शक्ति उनके देवताओं की देन है इसलिए बैगा गुनिया करने के पूर्व एक बार देवता का सुमरन जरूर करते हैं। पहाड़ी कोरवा जनजाति में जब व्यक्ति बुरी शक्तियों का भी सहारा

[3] *शर्मा, विनोद कुमार. (1993). कमार जनजाति का सामाजिक मानवशास्त्रीय अध्ययन. शोध प्रबंध : पं. रविशंकर शुक्ला रायपुर (म.प्र.).*

लेता है तब भी धार्मिक विश्वास और उससे संबन्धित क्रियाकलापों को करता है जैसे बैररानी एक देवी है जिसे बुरी शक्तियों कि देवी माना जाता है। इस देवी के संदर्भ में यह माना जाता है कि इनसे ही इन्हे बुरी शक्तियों कि प्राप्ति होती है और उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए ये धार्मिक क्रियाकलाप करते है । **मजूमदार[4](1961) "रेसेज एंड कल्चर्स आफ इंडिया"** में भारत की जनजातीय धर्म का उल्लेख किया उनके अनुसार मनुष्य के जीवन को भूतात्माओं की शक्ति व निराकार छाया से घिरा हुआ बताया है । आत्माओं के निवास स्थान के बारे में वर्णन किया जैसे – चट्टानों में , नदियों,जल प्रपात तथा वृक्षो में निवास करती है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में भूत-प्रेत की अवधारणा देखने को मिलती है। पहाड़ी कोरवा में भूत-प्रेत का निवास स्थान मुख्य रूप से जंगलों को ही मानते है। **Choudhary[5](1969)** ने मिदनापुर में रहने वाली मुंडा जनजाति का अध्ययन कर जादू-टोने से संबन्धित दो प्रकरणो को प्रकाश में लाया और उसे सामान्यीकृत कर कहा की ज्यादातर मुंडा विधवा महिला जादू-टोने में लिप्त रहती हैं। परंतु पहाड़ी कोरवा जनजाति में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला की विधवा औरतें ही टोने जादू में लिप्त होती है। **Singh[6] (1969)** ने पवित्र तथा अपवित्र की प्रासंगिकता की खोज कर पानी की उपयोग के ढांचे के बारे में वर्णन किया साथ ही यह भी बताया की पानी द्विअर्थी है, पानी में पवित्र तथा अपवित्र दोनों का गुण समावेश पाया जाता है। पहाड़ी कोरवा में भी पवित्र और अपवित्र वस्तु से संबन्धित अवधारणा पाया जाता है परंतु पानी के द्विअर्थी होने के बारे में मैंने शोध ऐसा कुछ नहीं पाया हैं।

---

[4] *Majumdar, D.N. (1961).Races and Culture of India. Bombay: Asia Publishing House.*

[5] *Choudhary, Buddhadeb. (1969). An Analytical Study of Witchcraft Among the Munda of Midnapur. Bulletin of Culture Research Institute.Vol.viii*

[6] *Sing, T.R. (1969). Water:Some aspects of Ritual Purity and pollution. Journal of Social Science. VOL. XII.No.2.*

दुबे[7] **(1993)** के अनुसार धर्म के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों होते है। सैद्धांतिक पक्ष में वह अपनी जीवन से संबंधित आवश्यकताओं को पूर्ति करने के लिए कुछ क्रिया करता है जैसे – जादू ,दूसरा पक्ष जिसमे इसके द्वारा पूजारियों तथा शमन के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति करता है। मेरे द्वारा अध्ययनित क्षेत्र में किए गए अध्ययन में पहाड़ी कोरवा में इन दोनों पक्षो को यहा अवलोकन किया गया है कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना चाहता है तो आवश्यकता के अनुरूप जादू का सहारा लेता है जो इसके सैद्धांतिक पक्ष के अंतर्गत आते है जब "बैगा" के द्वारा अपनी समस्या का समाधान करते है तब ये उनका व्यावहारिक पक्ष को दर्शाता है। पहाड़ी कोरवा बीमारी को लेकर अधिक धार्मिक होते हैं जब किसी व्यक्ति को कोई बीमारी होती है या वह बीमार होता है तो सर्वप्रथम वह बैगा के पास ही जाता है। "बैगा" पारंपरिक तरीके से हाथ छूकर पता लगाता है की उस व्यक्ति को क्या बीमारी है, बीमारी का पता चलेते ही बीमारी के उपचार से संबन्धित झाड़-फुक करते हुये धार्मिक क्रियाकलाप करता है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति समुदाय के जीवन में धार्मिक विश्वास एवं क्रियाकलापों का अधिक महत्व है। हर छोटे से छोटे कार्य को पूरा करने के लिए धर्म का सहारा लेता है। जिससे वो अपनी अवश्यकताओं की पूर्ति करते है। इस प्रकार मेरी पहली परिकल्पना **सत्य** साबित होती है|

मेरी दूसरी परिकल्पना

2. (a^0). पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक जीवन से संबंधित धार्मिक विश्वासों और कियाओं के प्रति रुझान बढ़ा है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं के प्रति रुझान कम हुआ है।

[7] *दुबे, श्यामचरण. (1993). मानव और संस्कृति.नई दिल्ली: राजमहल प्रकाशन प्रा.लि..133-147*

ग्राफ .1 पूजा-पाठ का आयु वर्ग के साथ संबंध

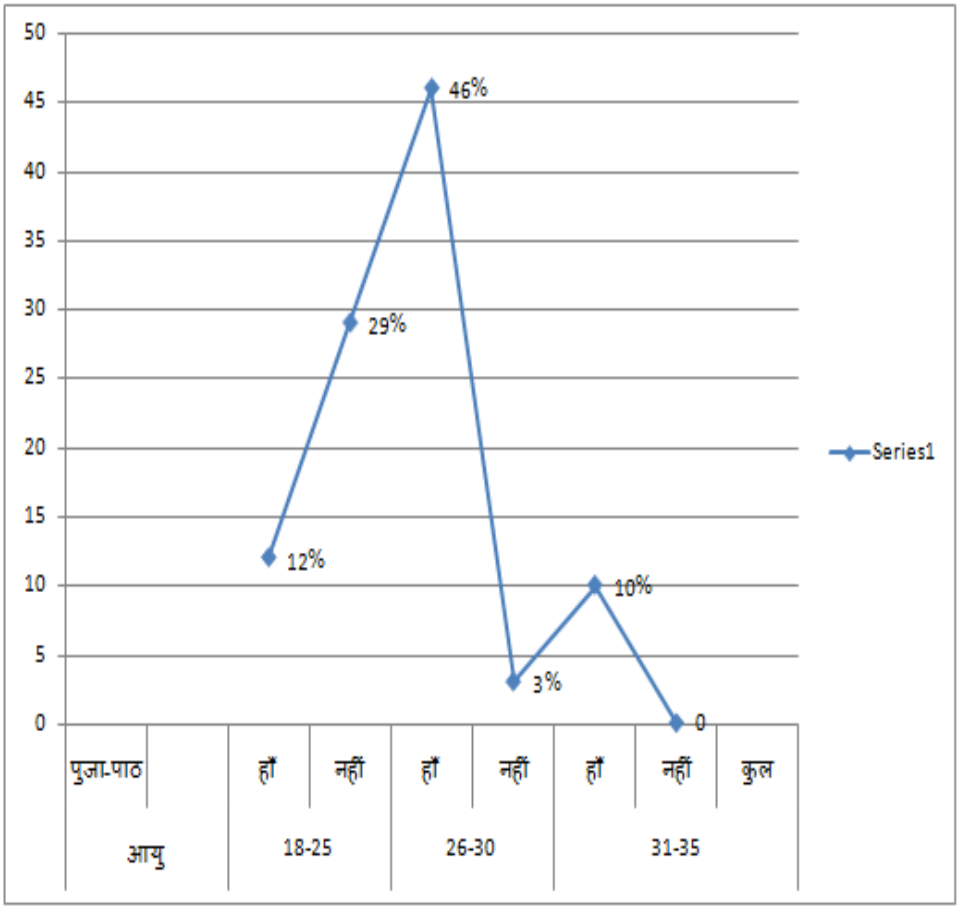

विश्लेषण -

जैसा की उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि 18-25 वर्ष के केवल 12.0 प्रतिशत सूचनादाता ही पूजा-पाठ करते हैं 29.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें,लेकिन 26-30 वर्ष के 46.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते हुये पाये जबकि 3.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ में संलग्न नहीं पाये गए है, 31-35 वर्ष के 10.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते हुये पाये गए।

ग्राफ 2 पूजा-पाठ का शिक्षा के साथ संबंध

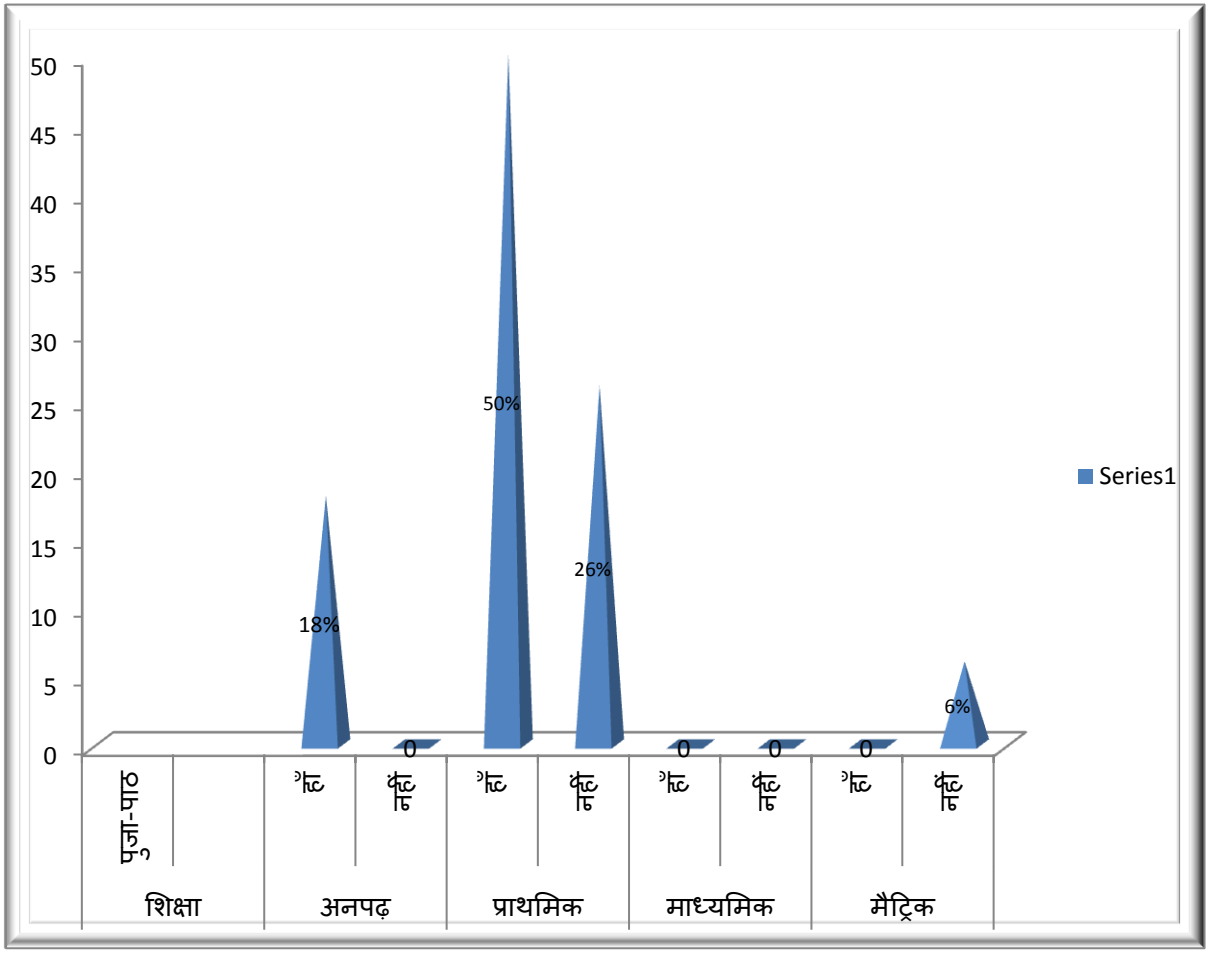

विश्लेषण –

उपरोक्त ग्राफ से ये स्पष्ट हो रहा है कि 18.0 प्रतिशत सूचनादाता है जो अनपढ़ है और पूजा-पाठ करते है, 50.0 प्रतिशत सूचनादाता प्राथमिक स्कूल तक पढ़ाई किए है जो पूजा-पाठ करतें हैं, जबकि 26.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें है, मैट्रिक कक्षा में पड़ने वाले 6.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें हैं।

ग्राफ.3 1 पूजा-पाठ का व्यवसाय के साथ संबंध

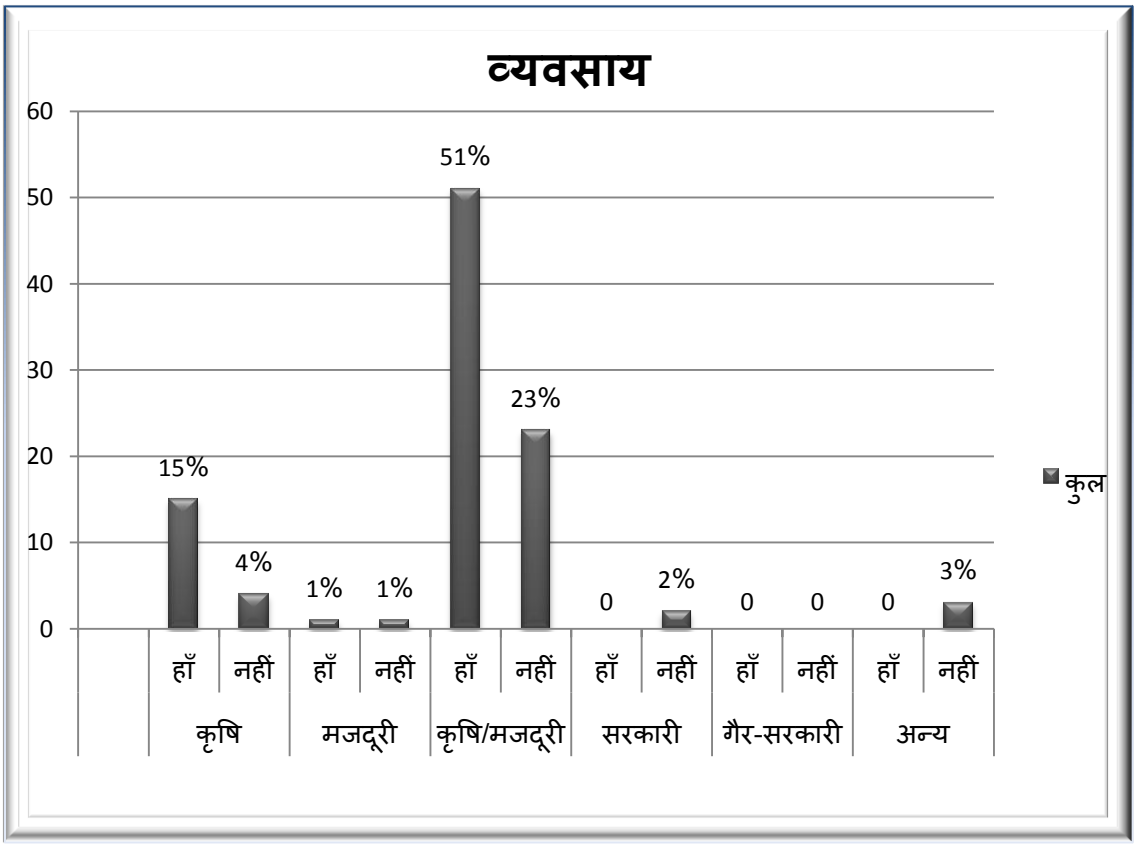

विश्लेषण –

उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट हो रहा है कि 15.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि का कार्य करते है जो पूजा-पाठ करतें पाये गए, जबकि 4.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि कार्य करने वाले सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं

करतें हैं, 51.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि/मजदूरी दोनों का कार्य करतें हैं और पूजा-पाठ में संलग्न पाये गए जबकि 23.0 प्रतिशत सूचनादाता जो कृषि/मजदूरी दोनों का कार्य करतें है पूजा-पाठ नहीं करतें हैं, 2.0 प्रतिशत सूचनादाता जो सरकारी काम में संलग्न थे पूजा-पाठ नहीं करतें है,

इस प्रकार हम तीनों ग्राफ का निष्कर्ष निकले तो यह बात सामने आती है कि जो कम उम्र के युवा वर्ग हैं उनमें रुझान की कमी स्पष्ट दिखलाई पड़ता है,उनकी शैक्षणिक स्थिति का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में जब अनपढ़ थे तब उनमें रुझान ज्यादा रही होगी लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बदते गया उनमें अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप के प्रति रुझान में कमी आते गई जैसा कि ग्राफ.2 में दिखाया गया है। व्यवसाय का अवलोकन करने पर यह बात उभर कर सामने आती है कि जैसे-जैसे पहाड़ी कोरवा में व्यवसाय का स्तर बड़ते गया युवा वर्ग मे अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप के प्रति रुझान में कमी आने लगी। इस तरह से इन सभी बातों से साबित होता है कि पहाड़ी कोरवा युवको में अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों के प्रति रुझान में कमी आई है या यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उनमें रुझान पाया ही नहीं गया। 68.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते थे और 32.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करते थे। जो सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करते है इसका प्रमुख कारण है या तो उनकी शादी नहीं हुई है या फिर जब तक घर के बुजुर्ग होते हैं तब तक पूजा-पाठ नहीं करते हैं। इस बात को भी नहीं नकारा जा सकता कि वे भौतिक रूप से तो नहीं जुड़े होते है मगर अभौतिक रूप से उनमें अपने देवी-देवताओं के प्रति विश्वास पाया जाता है। इस प्रकार मेरी Null परिकल्पना अ**सत्य** साबित होती है अर्थात Alternative परिकल्पना **सत्य** साबित होती है|

पहाड़ी कोरवा अत्यंत सरल व शांत स्वभाव के होते हैं। इनके सामाजिक पक्ष का अवलोकन करें तो आज भी पारंपरिकता की झलक दिखालाई पड़ता है। ये आज भी अपने समाज के द्वारा बनाए गए पारंपरिक नियम के विरुद्ध कोई ऐसा काम नहीं करते जिसके कारण उन्हे किसी प्रकार का कष्ट हो| कहने

का तात्पर्य यह है कि समाज द्वारा बनाए गए नियम कानूनों का बड़े ही दृढ़ता से पालन किया जाता है लेकिन कोई व्यक्ति उस नियम का पालन नहीं करता तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इनके आर्थिक पक्ष का अवलोकन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि वर्तमान समय में पहाड़ी कोरवा समुदाय आज कृषि के साथ साथ अपनी जीविका चलाने के लिए मजदूरी का भी काम करते है, पुरुष के साथ महिलाएं भी मजदूरी का काम करती है। इनके राजनैतिक पक्ष को जानने के बाद यह कहा जा सकता है कि आज भी यहा परंपरागत पंचायत प्रणाली देखने को मिलती है, समाज में नियम तोड़ने पर पंचायत के द्वारा दंड दिया जाता है।

******